

असधाररा

EXTRAORDINARY

भाग II—ख॰ड 3—उपख॰ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं 21

नई दिल्लो, ब्धवार, जनवरी 12, 1972/पौद 22, 1893

No. 21]

NEW DELHI, WEDNESDAY, JANUARY 12, 1972/PAUSA 22, 1893

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

(Grih Mantralaya)

NOTIFICATION

New Delhi, the 12th January 1972

S.O. 29E.—The following Order made by the President is published for general information:—

ORDER

Whereas I, V. V. Giri, President, of India, had on 16th October, 1969, made an Order, suspending for a period of one year the operation of certain provisions of the Government of Umon Territories Act, 1963 (29 of 1963) (hereinafter referred to as "the Act") in relation to the Union territory of Maripi r, and making certain incidental and consequential provisions which appeared to me to be necessary and expedient for administering the Union territory of Manipur in accordance with the provisions of article 239 of the Constitution during the aforesaid period;

And whereas I had on 13th October, 1970, 14th April, 1971 and 12th October, 1971 made further Orders continuing the suspension of operation of the provisions of the Act for a further total period of one year and three months beyond the date on which the first-mentioned Order would observise have expired;

And whereas I am satisfied that the situation in the Union territory continues to be such that the administration of that territory cannot be carried on in accordance with the provisions of the Act and that for the proper administration of the Union territory it is necessary that the operation of the provisions of the Act suspended by me under the first-mentioned Order should suspended and the incidental of concequential provisions made the earlishould continue to operate beyond two years and three months;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 51 of the Act and all other powers enabling me in that behalf, I hereby direct—

- (a) that the operation of the provisions of the Act suspended by virtue of clause (a) of the first-mentioned Order shall continue to remain suspended and the incidental and consequential provisions made by virtue of clause (b) of the said Order shall continue to be operative, for a further period of five days with effect from the 16th day of January, 1972; and
- (b) that for the words "two years and three months" occurring in clause (a) of the first-mentioned Order as subsequently amended, the words "two years, three months and five days" shall be substituted.

V. V. GIRI, President.

NEW DELHI-4;

The 12th January, 1972.

[No. F. 10/1/72-SR.] K. R. PRABHU, Jt. Secy.

गह मंत्रालय

ग्रधिमुचन।

नई दिल्ली, 12 जनबरी, 1972

का० द्या० 29-ई.---राष्ट्रपति द्वारा जारी किया गया निम्नलिखित द्यादेश सर्वेसाधारण के सूचनार्थ प्रकाणित किया जा रहा है .

श्राप्तेश

यतः, मैंने, व० वे० गिरि, भारत के राष्ट्रपति ने 16 प्रक्तूबर, 1969 को संघ राज्य-क्षेत्र शासन श्रिधिनियम, 1963 (1963 का 20) (जिसे इसमे इसके पश्चात् "श्रिधिनियम" कहा गया है) के कितप्य उपबन्धों का प्रवर्तन मिणपुर सघ राज्य-क्षेत्र के सम्बन्ध में एक वर्ष की प्रविध के लिए निलम्बित करते हुए, और कितप्य श्रानुषिक श्रीर पारिणासिक उपबन्ध बनाते हुए, जो मुझे पूर्वोक्त श्रवधि में मिणपुर संघ राज्य-क्षेत्र का प्रशासन सविधान के श्रनुच्छेद 239 के उपबन्धों के श्रनुसार खलाने के लिए श्रावश्यक श्रीर समीचीन लगे थे, एक श्रादेश किया था ;

श्रीर यत: मैले, उस तारीख के पश्चान्, जिसको प्रथम-उल्लिखित श्रादेश का श्रन्थणा श्रवसान हो जाता, कुल एक वर्ष श्रीर तीन मास की श्रीर ग्रवधि के लिए श्रधिनियम के उपबन्धों के प्रवर्तन का निलम्बन जारी रखते हुए 13 श्रवत्बर, 1970, 14 श्रप्रेल, 1971 श्रीर 12 श्रक्षूबर, 1971 को श्रीर भावेश किए थे ;

श्रीर यतः मेरा यह समाधान हो गया है कि उस सघ राज्य-क्षेत्र में स्थिति श्रभी भी ऐसी बनी हुई है कि उस राज्य-क्षेत्र का प्रणासन अधिनियम के उपबन्धों के श्रनुसार नहीं चलाया जा सकता और यहिक उस राज्य-क्षेत्र के उचित प्रणासन के लिए यह श्रावण्यक है कि प्रथम-उल्लिखित आदेश के श्रधीन भेरेदारा निलम्बित यधिनियम के उपबंधों का प्रवर्तन निलम्बित रहना चाहिए और उस श्रादेश से बनाबे गये श्रानुष्यिक और पारिणामिक उपबंध दो वर्ष और तीन मास के प्रचात् भी प्रवित्त रहने चाहिए; ग्रात , ग्राब, ग्राधिनियम की धारा 51 द्वारा प्रवत्त सक्तियों और इस निमित्त नुही समर्थ बनाने बाली ग्रान्य सभी शक्तियों का प्रयोग करते हुए मैं एनदुद्वारा निदेश देता हूं ——

- (क) कि जनवरी, 1972 के 16 वे दिन से पांच दिन की और अवधि के लिसे प्रथम-उत्तिखित आदेश के खण्ड (क) के भाधार पर मिर्धिनियम के निलस्थित उपबन्धों का प्रवर्तन निलस्थित रहेगा और उक्त आदेश के खण्ड (ख) के आधार पर बनाये गये आनुष्मिक और पारिणामिक उपबन्ध प्रवितित रहेगे, और
- (का) कि तत्पण्चात यथासशोधित प्रथम उल्लिखित आदेश के खण्ड (का) में भाग् ''दो वर्ष और तीन मास'' शब्दों के स्थान पर ''दा वर्ष, तीन मास और पांच दिन'' शब्द प्रतिस्थापित किये जामेंगे।

नई दिल्ली;

ब ० बे ० गिरि

12 जनवरी, 1972

राष्ट्रपति ।

[न • एफ • 10/1/72—एस • झार •] के • झार • प्रभु, सबुक्त सचित्र ।